

धर्म जीवन

जनवरी 2004

☆ परम पूजनीय भगवान देवात्मा का
153 वां शुभ जन्म महोत्सव

नव वर्ष की शुभकामनाएं

“धर्म जीवन” के पाठकों के लिए नया साल बहुत बहुत मुबारक हो । 14 वर्ष से धर्म जीवन आपकी सेवा में देवात्मा का विविध विषयों पर पैगाम पहुंचाता रहा है । आप लोगों ने लेखों को पढ़कर जो उत्साहप्रद पत्र लिखे हैं, उनसे इस पत्रिका को और भी लाभदायक बनाने की प्रेरणाएं मिलती हैं ।

इस वर्ष के अन्त तक लाखों करोड़ों की गिनती में पशुओं का वध हुआ, उन्हें अगले वर्ष में आख खोलने का अवसर नहीं मिला । 85 प्रतिशत भारतवासी अपनी पेट की भूख मिटाने के लिए ही चिन्तित थे । कईयों को कफन भी नसीब नहीं हुआ । उनके लिए बीते वर्ष और नए वर्ष का कोई अर्थ नहीं ।

पिछली शताब्दी में विश्व में जो विज्ञान के सहारे उन्नति हुई है, वह आश्चर्यचकित करती है, परन्तु यही विकसित मानसिक शक्तियां विश्व को तबाह करने पर भी तुली हुई हैं । पिछली सदी में कितनी खून की नदियां बहीं, कितने लोग भूख प्यास से मरे, कितनी बहू बेटियों की इज्जतें लूटी गईं, कितनी युवतियों की मांग के सिंदूर पोछे गये, इसका अनुमान भी कठिन है। इसका एक ही कारण है कि मनुष्य एक ओर आसमान की ऊंचाईयों को छू रहा है, दूसरी ओर नर्क पैदा कर रहा है । इसका मुख्य कारण मानवता में बढ़ रही, स्वार्थ भावनाएं, महत्वा-कांक्षाएं, द्वेष भावनाएं हैं । अपने पद और सत्ता को बनाए रखने के लिए क्या क्या हथकण्डे इस्तेमाल होते हैं, इसका ताजा उदाहरण हमारी केन्द्र सरकार का विशाल मन्त्रियों का समूह तो था ही, अब पंजाब में एक ओर आर्थिक संकट है, परन्तु अपने पद को कायम रखने के लिए मन्त्रियों का और विस्तार हो गया । इन सफेद हाथियों का बोझ जनता भूखे पेट रहकर चुका रही है ।

परन्तु हमारे भारतवासियों में एक ओर अज्ञानता है और दूसरी ओर आत्म बल की बेहद कमी है । विरोधता के लिए दोनों चीजों का होना आवश्यक है ।

यह प्रकृति केवल राजनैतिक या देश के प्रशासनिक ढांचे में ही नहीं है । विद्या और धर्म के क्षेत्र में इसके प्रवेश से भविष्य अन्धकारमय दिखाई देता है । एक एक यूनिवर्सिटी के elections में यह प्रवृत्ति साफ दिखाई देती है, जिसके कारण योग्य जनों को पिछाड़ दिया जाता है । उसका प्रभाव आगामी पीढ़ी पर पड़ना अवश्यम्भावी है ।

देव धर्म के संस्थापक पूजनीय देवगुरु भगवान ने बहुत उच्च स्तर के मानवीय मूल्य पैदा करने के लिए अपनी संस्थाएं बनाई थीं, परन्तु आज वह भी उसी पतन की चपेट में बुरी तरह आ गई हैं। अपने अपने पद को बनाए रखने के लिए प्रत्येक नैतिक मूल्य को ताक पर रख दिया जाता है और इसका पूरा प्रदर्शन करके नई शताब्दी में प्रवेश हुआ है । हम तो यह सहायकारियों से प्रार्थना करते हैं कि किसी प्रकार देवात्मा के देव प्रभाव वर्तमान हालात को बदलने में सहायक हों। हम जिस जिस कमजोरी के शिकार हैं उसे देख वा अनुभव कर सकें और जो गलतियां पिछली सदी की हैं वह इस सदी में न दुहराई जाएं, नहीं तो इतिहास और हालात ने किसी अच्छे मिशन को नष्ट करने वाले को आज तक नहीं बर्खा, या तो वह स्वयं खत्म हो जाते हैं या विरोधी उन्हें खत्म कर देते हैं। काश ! हम इस नये वर्ष में नये इरादों, नई कामनाओं, नये भलाई के कार्यक्रमों, गुरु मिशन की उन्नति के नये उपायों के साथ प्रवेश कर सकें ।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 1

जनवरी 2004

सम्पादक

डा. विनोद खेड़ा

वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सह सम्पादिका

सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 153 वां शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 153 वां शुभ जन्म महोत्सव 7 दिसम्बर से 10 दिसम्बर तक श्रीमती शुभवती धर्मशाला सैक्टर 18-डी चण्डीगढ़ में पिछले कई वर्षों की तरह पूरे चाव भाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैयारियों की गईं। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब स्थानों का एक एक साथी को साथ लेकर या अकेले दौरा किया और साथी सेवकों और श्रद्धावानों को महोत्सव पर पहुंचने के लिए प्रेरणा दी। बहुत से पत्र इस मकसद के लिए लिखे गए। हित स्रोत और धर्म जीवन के विशेष अंक निकाले गए। इनके द्वारा भी महोत्सव का शुभ संवाद पहुंचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमन्त्रण पत्र छापे गए और अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

महोत्सव की सभाओं के प्रोग्राम के लिए इस साल पंडाल पहले की तरह से बनाया गया। उसके लिए तरपाल लाई गई। पण्डाल को अन्दर से बर्फ जैसी सफेद चादरों से ऊपर नीचे सब तरफ से खूब सजाया गया। बिजली के सुन्दर फानूसनुमा शैण्डलियर लटकाए गए। गुरु महाराज का बड़े साईज का फोटो और माटोज़ सजाए गए। उच्च आत्माओं की फोटोज़ पण्डाल के

दोनों तरफ सजाई गईं। हाल को श्रीमती सुरजीत बराड़, जगदीश जी, रश्मि जी तथा अन्य अध्यापिकाओं ने मिल कर सजाया। इससे हाल की शोभा और भी बढ़ गई। फर्श पर सफेद चादरों की बिछाई की गई। नई कुर्सियों की लाईने लगाई गईं। पौधों, गमलों, बांसों पर झण्डों, बड़े विजय पताका आदि ने सारे आंगन को सजा दिया। हमेशा की तरह पराली का अच्छा प्रबन्ध किया गया, और कमरों में बिछाई की गई। बैंड आदि का प्रबन्ध किया गया। लंगर और कैंटीन का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया। श्रीमान जगदीश जी, सुखदेव, बलरूप जी आदि ने सब तैयारियों में बहुत संग्राम किया और बहुत श्रद्धापूर्वक सेवा की। जगदीश जी कई दिन इन सेवा के कामों में भाग भाग कर सेवाकारी होते रहे और खुशी खुशी यह संग्राम किया।

इस पावन अवसर पर पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, यू. पी., बिहार, दिल्ली आदि स्थानों से यात्री पहुंचे। कल्याण, भुच्चों मण्डी, गोनियाना मण्डी, मोगा, भटिंडा, थराजवाला, जंडवाला, संगरूर, मोहाली, लुधियाना, पंचकूला, कसौली, कुंआ खेड़ा, धर्मशाला, महिमा सवाई, महिमा सरकारी, पदमपुर, गज सिंह पुर,

खतौली, मल्लेका, गुरु हरसहाए दाणी (मौजदीन), केसूपूरा, बनी, सिरसा, तलवंडी भाई, मंदवाड़ी, डेराबस्सी, अम्बाला, यमुनानगर, मईयांवाला, रायपुर रानी, दिल्ली, कौथल, मेरठ, मजोट गिंदडां वाली, बूंगी, फिरोजपुर, व लोकल चण्डीगढ़ आदि स्थानों से सैंकड़ों यात्री पहुंचे।

लोकल अंग्रेजी और हिन्दी अखबारों, ट्रिब्यून, हिन्दुस्तान टाइम्स, इंडियन एक्सप्रेस आदि में चारों दिन महोत्सव के प्रोग्रामों की सूचना छपती रही। यात्रियों के स्नान आदि के लिए गर्म पानी का भरपूर प्रबन्ध था। यह सेवा प्रत्येक वर्ष की तरह श्री सीताराम जी और श्री रतन सिंह जी चौहान खुशी खुशी करते रहे। घण्टा बजाने की सेवा श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा और ज्ञान चन्द जी करते रहे। पुस्तकों की स्टाल पर श्री वर्मा जी डियूटी करते रहे। भजनों का गान श्री जगदीश जी करते रहे। दफ्तर का काम जगदीश जी के साथ विशिष्ट जी और उनके सुपुत्र करते रहे। हारों और गैसों का प्रबन्ध भी इसी पार्टी ने सम्भाला।

गुरुदेव राज जी भजनों के गान में बहुत सहायक हुए। बच्चों की सभा को श्रीमती सुरजीत जी बराड़ ने सम्भाला। यात्रियों की हाजरी उत्साह जनक थी।

खाने का प्रबन्ध बहुत आला रहा उपस्थित जन बहुत धन्य धन्य होते रहे। दान भी आशाजनक हुआ। इस सबके लिए गुरु महाराज और अन्य सहायकारी शक्तियों का जितना धन्यवाद किया जाए, कम है।

महोत्सव के अवसर पर प्रत्येक सभा में देव प्रभावों का अति हितकर मण्डल बनता रहा, उसका ब्यान करना कठिन है। सभाओं के प्रोग्राम का संक्षिप्त हाल इस प्रकार है।

7 दिसम्बर 2003 प्रवेश सभा शाम 4 बजे

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी - सब से पहले श्रीमान जगदीश प्रसाद जी ने सदा की तरह दिल के भावों से भरकर “हमारे पूजनीय सत्गुरु, जी तुम हो धन्य,” नामक भजन का आलाप शुरू किया।

उपस्थित जनों ने भी जोश से भरकर उनका साथ दिया। इस गीत के साथ ही महोत्सव का शुभारम्भ हो गया। फिर सुन्दर हार के द्वारा भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया गया, देव स्तोत्र का समूह गान किया गया और उसकी सभापति जी ने व्याख्या की। प्रार्थना के बाद Model School के बच्चों ने मिलकर स्वागतम् का सुन्दर भजन गाया।

सभापति जी ने फरमाया कि सब चीज़ें कीमती हैं। धन, सेहत और विद्या बहुत कीमती हैं। मगर सबसे कीमती हैं वह प्रभाव जो हमारी नीच जिन्दगी को दिखाते हैं और उसको मिटाते हैं और उच्च जीवन को पैदा करते हैं। जो अपने आप को देख लेता है वह सबसे बड़ा दान प्राप्त कर लेता है। ऐसे शुभ अवसर पर पहुंचने वालों का सम्मान प्रदर्शन किया गया। खड़े होकर सब को शुभ आगमन कहा गया। बहुत भरे दिल और आंसुओं के साथ सबका पुरजोर स्वागत किया गया। फिर एक भजन श्रीमान जगदीश जी ने “देते हैं धन्यवाद तुम्हें” वाला उच्छ्वास से भरकर गाया। जारो कतार रोते हुए गाया। सभापति जी ने अपने भतीजे की मसाल दी कि वह जब गांव से यहां मेरे पास रहने के लिए आए थे तो उनका रोडा सिर था और कमीज पाएजामा सा पहना हुआ था। चन्द महीनों के अंदर ही उनकी Dress में बड़ा परिवर्तन आ गया। वह खूब जोर शोर से dress-up होने लगे और अब वह मेरे कपड़ों में और क्रीज़ आदि में नुक्स निकाल देते हैं। आगे बताया कि 1982 में श्रीमान सैक्टरी साहिब को नीम मुर्दा हालत में उनके सम्बन्धी जोर देकर मई के आखिर में मनाली ले गए। रास्ते में उनके सम्बन्धी पछताने लगे कि इनको नहीं लाना चाहिए था मगर मनाली पहुंचकर उनमें नई जान आ गई और वह हृष्ट-पुष्ट हो गए।

जगदीश जी क्यों शराब, मांस, सिगरेट, जुआ आदि छोड़ने के लिए मजबूर हो गए? गुरु महाराज की ज्योति और तेज इंसान का ध्यान अपने नीच जीवन की तरफ फेरते हैं। भगवान ने भारत में जन्म लेकर सारे

विश्व में भारत का मुख उज्जवल कर दिया है। स्वामी गोविन्दराम जी, भाई मोहनदेव जी और श्रीमान हासामल जी के बारे में ब्यान किया गया।

हमारा पवित्र कर्तव्य है कि हम ऐसे आविर्भाव को पाकर भी अगर खामोश रहेंगे तो हमारा कुछ नहीं बनेगा। आठ पाप छोड़ कर कुछ नहीं बनेगा। जो दान मिला है उसे दूसरों में बांटो। स्वार्थी रहना, गन्दगी का कीड़ा बनना है। स्वार्थी जीवन लाभ नहीं कर सकता। देव प्रभाव ही स्वार्थ दिखाते हैं और छुड़ाते हैं और नए लोक में बास करवाते हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने प्रभाव पाए और दूसरों की सेवा के लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया। पत्थर खाए। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी और गुरुबख्श सिंह जी सेवा करते और सेवा देने वालों को बार बार धन्यवाद देते। भगवान ने गिदड़ों को खरबूजों की राखी पर बिठा दिया। नेत राम जैसे को प्रचारक लड़कियों के रक्षक और पिता बनाकर उनके साथ भेजा। सरदार हरनाम सिंह जी का परिवर्तन सुनाया गया।

पति पत्नि के व्यवहार बदले हैं। बेटों के व्यवहार बदले हैं। यह प्रवेश सभा क्या थी। देव प्रभावों का जोरदार झोंका था। क्या सभापति अंदर से हिले हुए थे और दिल के उद्गार पेश कर रहे थे। अधिकांश हाजरीन पाक आंसू बहा रहे थे। अपना महा सौभाग्य बोध करके गुरु चरणों में नमन कर रहे थे। देव प्रभावों का एक शानदार वातावरण था। जिसमें सभी धन्य धन्य महसूस कर रहे थे। इसी सभा से ही महोत्सव सार्थक हुआ महसूस होता था।

इसके पश्चात श्री सैक्रटरी साहिब ने जो सभा से बहुत प्रभावित हुए थे भरे दिल से हाजरीन का स्वागत किया और सभापति जी को हार्दिक धन्यवाद दिया और अगले दिनों के प्रोग्रामों का पता दिया। जरूरी सूचनाएं और इयूटियों का वर्णन किया। सब ने खड़े होकर जय ध्वनि की और सभा समाप्त हो गई।

8 - 12 - 2003 (सोमवार) पहली सभा प्रातः 8:30

बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बंध

सबसे पहले श्रीमान जी ने 'मेरे जीवन के दाता तुमरी महान महिमा' वाला भजन गाया। फिर देवस्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। फिर सभापति जी ने हार्दिक भावों से प्रार्थना की। फिर परम आवश्यक जीवन दायक वाला भजन गाया गया। इसके बाद सभापति जी ने फरमाया कि इस विषय के साथ इंसफ करना मेरे लिए असम्भव है। केवल वही जन इस विषय पर इंसफ कर सकता है कि जो चार पहलुओं में विशेषता रखता है।

1. आत्मा को सत्य और सार समझता हो।
2. जो नीच भाव उसका पतन करते हैं उनसे मुक्ति पाने के लिए उच्च साधनों में रत हो।
3. जो भाव उसका विकास करते हैं, उनको उत्पन्न करने के साधनों में रत हो।
4. जो देवात्मा का आकर्षण पाना लोचता हो।

विकास की theory यह बताती है कि जीवन का यह आरम्भ भौतिक शक्ति और भौतिक पदार्थों से हुआ। फिर उनसे पौधों, पशुओं से विकास पाता हुआ इंसान पैदा हो गया है। विकास में इंसान में यह सोच पैदा हो गई और सवाल पैदा हुआ कि मैं क्या हूँ? मेरा जीवन क्या है? इसका लक्ष्य क्या है, क्या करना है, क्या नहीं करना। इस प्रकार के सवालों का सिलसिला आरम्भ से ही जारी हो गया।

जीवन के लिए कुछ पदार्थ जरूरी हैं। आक्सीजन के बिना हम चंद मिनट जी नहीं सकते। यह हमारी परम आवश्यक सम्बंधी है। इसी प्रकार सूरज, पानी और खुराक भी हमारे परम आवश्यक सम्बंधी हैं। हमें इस दुनिया में जो लाए हैं, वह हमारे खास सम्बंधी हैं। वह माता पिता हैं। समाज में जो हमारा विकास होता है वह

सम्बन्धी भी हमारे परम आवश्यक सम्बन्धी हैं।

हमारी हस्ती में हमारी आत्मा मुख्य वस्तु है। सार और कीमती है। यह हमारी जान मुख्य है। जान शरीर बना सकती है। शरीर जान नहीं बना सकता।

नशा से, स्वाद से, आलस्य व काम वासना आदि से सभी से बढ़कर शरीर का नाश होता है। घमण्ड और नीच घृणा, स्वार्थ आदि घोर बर्बादी लाते हैं। परम पूजनीय भगवान का सम्बन्ध उनसे मुक्ति देता है। इसलिए यह परम आवश्यक सम्बन्ध है। उच्च सम्बन्धी उच्च भाव पैदा करते हैं। गांधी, टरेसा के सम्पर्क से योग्य जनों में हमदर्दी, ईमानदारी पैदा हो जाते हैं। सात्विक भावों से नीच गति और पाप भी हो जाता है। हमदर्दी, शुक्रगुजारी से गलत काम भी हो जाते हैं।

मेरे घर में एक आदमी कहने लगा कि मैं दो तीन बार पहले भी आया हूँ। मेरे दामाद की टांग टूट गई है। मुझे पैसे चाहिए। मैंने 500 रुपये दे दिए। उसने अफीम लेकर खाई। कबीर जी ने चोर की मदद की। पूजनीय भगवान के सम्बन्ध से सात्विक जीवन से होनी वाली नीच गतियाँ भी दूर हो जाती हैं। इसलिए भगवान का सम्बन्ध परम आवश्यक है। अपनी नीचता देखने के लिए और उससे बचने के लिए देवात्मा के सम्बन्ध की जरूरत है। अपना आप देखने के लिए देवात्मा के सम्बन्ध की जरूरत है। और उपकारियों की दुनिया नजर आती है। इसलिए भी देवात्मा के सम्बन्ध की जरूरत है। माता पिता के साथ संतान का श्रद्धा, शुक्रगुजारी व सेवा का सम्बन्ध बनाने के लिए भगवान देवात्मा के सम्बन्ध की जरूरत है। जीवन को नए अर्थ और नई सार्थकता देने के लिए भगवान देवात्मा का सम्बन्ध जरूरी है। फर्ज शनाश कर्तव्य बोधी बनाने के लिए भगवान देवात्मा के सम्बन्ध की जरूरत है। अच्छे अध्यापक, पटवारी, तहसीलदार और अन्य उच्च कर्मचारी बनाने के लिए भगवान देवात्मा के साथ सम्बन्ध की जरूरत है। मुझ जैसे को भगवान ने माता पिता की पूजा में लगा दिया। मेरे

जैसे कठोर टीचर को दिखाया कि बच्चे पीटने की चीज नहीं हैं, प्यार करने की चीज हैं। मुझे उन्हें प्यार करने लगा दिया। हर परिवार को अपनी रक्षा और विकाश के लिए देवात्मा का सम्बन्ध परम आवश्यक है। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी। गुरु दर की महिमा दर्शाने वाली थी। अधिकारी आत्माओं का हित करने वाली थी। इसके पश्चात श्री सैकटरी जी ने हाजरीन को अपनी खुशी का प्रकाश करते हुए बताया कि हमारे दरमियान माननीय श्रीमान विजय कुमार जी अग्निहोत्री (गुरु महाराज जी के पोते) अपनी धर्म पत्नि जी समेत उपस्थित हैं। हमें चाहिए कि उनके दर्शन करके और सम्मान प्रदर्शन करके अपना अवश्य भला कर लें। बहुत सी हाजरीन ने उन्हें प्रणाम करके अपना भला किया। शाम के Lecture का पता देकर यह सभा समाप्त की गई।

पब्लिक लैक्चर 4 बजे शाम

वक्ता : प्रिंसीपल सुरजीत बराड़ा

प्रधान : डा. विनोद जी खेड़ा

प्रधान जी ने संक्षिप्त और प्रभावशाली शब्दों में वक्ता का परिचय दिया और फिर ईश्वर का विश्वास क्यों मिथ्या है के विषय पर वक्ता ने अपना Lecture दिया। जो इस प्रकार था :

ईश्वर का विश्वास क्यों मिथ्या है?

ईश्वर विश्वास सदियों से धार्मिक जनों और दार्शनिकों और वैज्ञानिकों में विवाद का विषय रहा है। यह स्वभाविक है। ईश्वर की उत्पत्ति उस समय हुई जब मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ इतनी उन्नत ही नहीं थी। वह नेचर की घटनाओं अर्थात् वर्षा, भुचाल, तुफान, ओले, बिमारियों के कोप को देखता था, तो उसकी कल्पना में यही आ सकता था कि यह सब मुसीबतें भेजने वाला कोई है। ताप, अग्नि, वायु के प्रभावों को देखकर सूर्य देवता, इन्द्र देवता आदि देवताओं की कल्पना की, आखिर वह एक पुरुष अर्थात् ईश्वर को ही मुख्य रूप से सृष्टिकृता मानने लगा। उसका नाम अल्ला,

वाहगुरू, परमात्मा आदि रखे गए। अब ईश्वर का विश्वास सत्य है या मिथ्या, या उस समय के अविकसित दिमाग की कल्पना है, यह विचारणीय विषय है।

आज के वैज्ञानिक युग में प्रत्येक विषय के सत्य या असत्य रूप को परखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण विधि परीक्षा विधि है। ईश्वर के भीतर जो गुण बताए जाते हैं क्या वह किसी परीक्षा विधि पर खरे उतरते हैं?

सर्वप्रथम ईश्वर को इस ब्रह्मांड का सृष्टा बताया जाता है। परन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण, (जो अब हमारी शिक्षा का आधार है) के अनुसार क्या हमारा सौर्यमण्डल और क्या अन्य सौर्यमण्डल जड़ और शक्ति से बने हैं और विकास की क्रिया से कैसे हमारा सूर्य जो एक आग का गोला था, उससे ग्रह अलग हुए, कैसे हमारी पृथ्वी बनी, एक सैल के जीव, फिर बहु सैल के जीव और वनस्पति जगत, पशु जगत और बानर की एक श्रेणी से मनुष्य विकसित हुआ। यह परीक्षा विधि से सिद्ध होता है, यहां परमात्मा की कोई हस्ती दिखाई नहीं देती। ईश्वर ने इस सृष्टि को कैसे बनाया, वह भिन्न ग्रन्थों में एक से बढ़कर एक गप्पें मारी गई हैं, जो केवल सत्य नहीं बल्कि हास्यास्पद हैं। जो भी घटना वा अस्तित्व परीक्षा विधि पर ठीक सिद्ध नहीं होता, वह केवल कल्पना है, सत्य नहीं।

दूसरा गुण ईश्वर में बताया गया है कि वह सर्वज्ञ वा सर्वशक्तिमान है। क्या परीक्षा विधि से यह सत्य सिद्ध होता है। सर्वशक्तिमान होकर वह अपने ही मन्दिर मस्जिदों की रक्षा नहीं कर सकता, विदेशियों ने आकर मन्दिरों को तहस नहस कर दिया, और ईश्वर देखता रहा। भक्त जन दर्शनों के लिए जाते हैं, मार्ग में ही दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं, क्या ईश्वर उनकी रक्षा नहीं कर सकता? यदि वह तर्क दिया जाता है कि पिछले जन्म में उन्होंने पाप कर्म किए थे, तो पिछले जन्म में उनसे पाप करवाने वाला कौन था? पापी जनों को वह पैदा ही क्यों करता है? आज जो पाप का राज्य फैला

हुआ है, वह फैला रहा है और फिर वही सज़ा देगा? क्या कोई माता पिता चाहेंगे कि वह पापी संतान को जन्म दें। ईराक में मुसलमानों को बचाने क्यों नहीं आया? हमारे मन्दिरों, गुरुद्वारों में बलात्कार तक के अपराध हो जाते हैं, उन मासूम बच्चियों की रक्षा क्यों नहीं करता?

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि “बादलों के उस पार से कोई हमारी रक्षा करने नहीं आएगा।” हम ऊपर वाले की दुहाई देते रहते हैं। मन्दिरों में लाखों, करोड़ों रुपये के चढ़ावे चढ़ते हैं, वह चढ़ावे न लेकर ईश्वर क्यों नहीं पुरोहितों को मजबूर करता कि यह पैसा गरीब जनता पर लगे? हमारे अंधविश्वास और कायरता ने कि ईश्वर नाराज़ न हो जाए, हमें तर्क वितर्क करने के योग्य ही नहीं छोड़ा।

अगला गुण गाते हम नहीं थकते कि ईश्वर दयावान है। किसान कड़ी मेहनत करके खेती करते हैं, टिड्डी दल भेजकर फसलें तबाह करके कौन सी दयालुता का परिचय देता है? युद्ध, महामारियां, भीषण तुफान, भूकम्प, हिसंक जानवरों द्वारा डर यह सब करके वह दयालु की उपाधि धारण किए बैठा है। और अंधे भक्त उसको परम दयालु कहकर सब कुछ अपने भाग्य पर छोड़ देते हैं। बहुत वर्ष पहले मद्रास में एक रेल दुर्घटना हो गई थी। कारण ढूँढने के लिए कमीशन बैठाया गया, परन्तु रिपोर्ट के अनुसार उसके लिए जिम्मेवार भयंकर तेज हवा थी, तो उस केस को Act of God कहकर बंद कर दिया गया, क्योंकि ईश्वर को न हम वारंट भेज सकते और न सज़ा दे सकते हैं। जो भयंकर लीला ईश्वर दिखाता है यदि कोई मनुष्य उसका कुछ हिस्सा भी करे और पकड़ा जाए तो सलाखों के अंदर हो।

हमें ईश्वर से कोई दुश्मनी नहीं, परन्तु इस अंध विश्वास ने जितनी हानि की है, उसको सामने लाकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सच्चाई की बरकतें और मिथ्या विश्वास की महा हानियां हैं।

सर्वप्रथम ईश्वर विश्वासियों के कारण विज्ञान

के विकास की गति ही मंद नहीं पड़ी, बल्कि सच्चाई की खोज करने वाले वैज्ञानिकों पर भयंकर अत्याचार किए गए, उन्हें जिंदा जला दिया गया, जेलों में रखा गया। गैलीलियो के साथ कितना निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया गया, कोपरनिकस ने जब यह खोज लिया कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है, तो डर से मारे उसने अपनी किताब लेटिन भाषा में लिखी, क्योंकि ईश्वर विश्वासियों के अनुसार ईश्वर रचित ग्रन्थों में लिखा था कि सूर्य पृथ्वी के गिर्द घूमता है। परन्तु एक कैथोलिक पादरी ज्योर्दानो ब्रूनो को भाषा आती थी, उसने यह पुस्तक पढ़ी, जिज्ञासु नवयुवक की उत्सुकता बढ़ गई। जब ईसाई पादरियों को पता लगा, तो उसकी विरोधता शुरू हो गई, वह स्विट्ज़रलैंड चला गया, वहां इस पर अध्ययन करता रहा, इन ईश्वर भक्तों ने उसे वहां भी नहीं छोड़ा, उसको धोखे से इटली बुला लिया, जेल में फेंक दिया। 8 वर्ष तक जेल की यातनाएं सहता रहा, और उसे ईश्वर रचित पुस्तकों पर विश्वास रखने पर मजबूर करते रहे, परन्तु बहादुर नवयुवक नहीं टूटा। आखिर धर्म के ठेकेदारों ने ईश्वर के नाम पर उसे बिना खून बहाए मौत की सज़ा सुना दी। उसकी जुबान काट दी गई। जलूस के रूप में ईश्वर विश्वासियों ने उसे गलियों में से गुज़ारा और अन्तिम समय भी जब पूछा कि तुम अपने विचार बदल दो, परन्तु उसके न कहने पर उसे जिंदा जला दिया गया, और ऐसा भयंकर पाप करके, उन्होंने अत्याचारी परमात्मा को खुश किया। अब 1889 ई0 में उसका स्मारक बनाया गया है और उसे श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए लोग जाते हैं। वही शिक्षा अब पादरी लोग भी अपने बच्चों को दिलवाते हैं, परन्तु चर्च में जाकर फिर मिथ्या का प्रचार करते हैं। कैसी विड़म्बना? कैसी कायरता! सैंकड़ों वैज्ञानिकों ने अपनी जानें दे दीं, तब कहीं जाकर इस संसार को सत्य रोशनी दी।

ईश्वर विश्वास ने द्वेष भावना को जन्म दिया। कहने को हम कहते हैं कि परमात्मा एक है, परन्तु परमात्मा के नाम पर भिन्न भिन्न शिक्षाओं ने इंसानों को

एक दूसरे का दुश्मन बना दिया है। यह रोज़ाना के सांप्रदायिक दंगे इसका उदाहरण हैं। राजनैतिक नेता जिस प्रकार मनुष्य की इस कमज़ोरी को भुनाते हैं, वह भी कोई भूला नहीं।

मुसलमानों के खुदा ने जहाद की शिक्षा देकर कि अपने से विरुद्ध मत रखने वालों को मौत के घाट उतार दो, अत्याचार की सीमाएं पार कर दी हैं। इस शिक्षा का प्रभाव हम अब भी देख रहे हैं। द्वेष भावना को ईश्वर विश्वास ने कूट कूट कर अपने विश्वासियों में भर दिया है।

चार चार शादियों की शिक्षा देकर औरतों पर तो जुल्म ढाया है, उसको कौन नहीं जानता, क्योंकि ईश्वर भी मर्द है, इसलिए उसने आदमियों की चार शादियां और अपने परम भक्तों को स्वर्ग में भी 70 - 70 हूरें देने का आश्वासन दिया है।

पशुओं पर ईश्वर के नाम पर अत्याचार होते हैं, क्या पशु ईश्वर ने पैदा नहीं किए? परन्तु स्वार्थी मनुष्य ने यह कहकर उस पर जुल्म किए कि ईश्वर ने हमारे खाने के लिए इनको पैदा किया है। यदि यह मूक जानवर बोल सकते और किताबें लिखते तो वह भी लिख देते कि इंसानी बच्चे हमारे खाने के लिए पैदा किए हैं।

वेदों आदि में भी ऐसी शिक्षा मिलती है कि वेदों को न मानने वाले मर जाएं - दुश्मनों को मारने वालों के लिए विशेष मंत्र दिए गए हैं।

कई प्रकार की व्यभिचार की शिक्षा हमारे ईश्वर रचित ग्रंथों में मिलती है क्योंकि उस समय के अनुसार नैतिकता के कोई सामाजिक नियम ही नहीं थे।

अकबर ने महाभारत का फारसी अनुवाद करने के लिए किसी विद्वान को नियुक्त किया। और एक दिन उससे पूछा कि काम कैसे चल रहा है, तो उसका जवाब था, “जहां पनाह! वैसे तो सब ठीक है, परन्तु इस ग्रन्थ में उल्लिखित एक भी व्यक्ति हलालज़ाद (वैद्य संतान)

नहीं, यह सब ऐसे ही पैदा हो गए!” कोई हवा का पुत्र, कोई सूर्य का पुत्र, नजायज़ सम्बंधों को ढकने का एक ढंग था।

परन्तु हमारी बदकिस्मती यह है कि उन ग्रन्थों का कौन सा अध्ययन करते हैं, पण्डित, मौलवी जो बताते हैं, सुनते हैं। ईश्वर रचित ग्रन्थ अश्लीलता से भरे पड़े हैं। हमारा तो तर्क यह है कि यदि दुर्घटना में 15 आदमी मर जाते हैं और 5 बच जाते हैं, तो हम कहेंगे कि ईश्वर की कृपा से 5 आदमी बच गए, यह कोई नहीं कहते कि ईश्वर ने 15 आदमी मार डाले। जन्म देने वाला भी वही, पाप कराने वाला भी वही, मारने वाला भी वही, क्या मजाक है!

एक और भयंकर शिक्षा ने “कि ईश्वर का नाम वा जाप करने से सब गुनाह मुआफ हो जाते हैं” दुनियां को पाप करने का Licence दे दिया है। लेकिन क्या आज का कानून गुनाहगार को क्षमा करेगा। गुनाह तो किसी व्यक्ति विशेष के सम्बंध में होता है, तो ईश्वर इतना चापलूसी पसंद है कि उसका नाम लिया नहीं कि गुनाहगार पाक साफ हो गया। कितनी घटिया शिक्षा!!

ऐसे परमात्मा को मानना यदि आस्तिकता है तो मुझे अपने नास्तिक होने पर गर्व है।

देव धर्म के बानी देवात्मा भी ईश्वर के अनन्य भक्त थे। ईश्वर उपासना जिस गहराई से वह करते थे, आम इंसान इतनी भक्ति कर ही नहीं सकता था, परन्तु 1890-94 में जब विज्ञान काफी विकसित हो चुका था, तो उन्होंने विज्ञान मूलक पुस्तकें पढ़ीं, विशेष रूप से डारविन की विकास की फिलासफी ने उन्हें हिला दिया, उनकी जिज्ञासा और बढ़ती गई। विज्ञान की रोशनी में उन्हें ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह होने लगा। मनुष्य का जन्म विकास क्रम में हुआ है, बानर जाति से धीरे धीरे वह विकसित हुए हैं, यह एक ऐसी सच्चाई थी जो उनकी खोज का आधार बन गई। बेशक ईश्वर का रूप समझने वाले मनुष्य का अहंकार कि उसके पूर्वज

बानर है, उसे यह स्वीकार न करने दे, परन्तु सत्य को मिथ्या अहंकार से ढका नहीं जा सकता।

ज्यों देवात्मा विज्ञान की सचाईयों को जानते गए, उनका ईश्वर विश्वास क्षीण होता गया। वह ऐसा कठिन समय था कि पहले ही उनकी शिक्षा को नई विचारधारा के कारण उनकी घोर विरोधता हो रही थी, ईश्वर विश्वास के छोड़ने पर एक और तोप उनके विरोधियों को मिल जानी थी, परन्तु उनका हृदय सत्य अनुरागी का हृदय था। सच्चाई को जानकर वह अपने किसी लाभ वा डर के कारण किसी प्रकार की मिथ्या का साथ नहीं दे सकते थे। आखिर बहुत संघर्ष के बाद उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को विज्ञान की कसौटी पर मिथ्या जानकर सदा के लिए त्याग दिया। वह पूर्ण रूप से ईश्वरवादी न होकर विश्ववादी बन गए। नेचर के नियमों पर आधारित विज्ञान मूलक अध्यात्मिक शिक्षा की नींव रखी और यह भी ऐलान कर दिया कि मेरी कोई शिक्षा कभी भी विज्ञान के विरुद्ध हो, तो वह भी छोड़ने योग्य है।

महोत्सव का विशेष शुभ जन्मदिन

कीर्तन : प्रातः 6:30 बजे आज महोत्सव का विशेष दिन था। सब यात्री खुशियों से भरे हुए थे। सुबह सुबह चार बजे से ही गरम पानी ले लेकर स्नान कर रहे थे। नई पोशाकें पहन रहे थे। एक दूसरे को मिलते समय शुभ जन्म की मुबारक दे रहे थे। तैयार हो हो कर महाराज के अर्चन के लिए अपनी अपनी फूलमालाएं ले रहे थे और खुले आंगन में कीर्तन में शामिल हो रहे थे। केसुपुरा व मल्लेका वाले साथियों ने खूब पाक जोश से भरकर महिमा विषयक भजन गाए। प्रायः घण्टा भर सैंकड़ों यात्री कीर्तन में शामिल होकर लाभ उठाते रहे और गीत गाते रहे। सबके हृदय खुशियों से भरे हुए थे और झूम रहे थे। सूरज की पहली किरण के साथ घण्टा बजने के साथ परम पूजनीय भगवान की जय के नारे बुलंद हुए। उसके बाद “प्रगटे देवगुरु भगवान” वाला भजन सबने जोश से गाया। सब ने पूरे जोश से जय ध्वनि का साथ

दिया। फिर सैक्टरी साहिब ने मंच पर खड़े होकर धर्म सम्बन्धियों से सम्बोधन करते हुए पहले सब को इस विशेष दिन की मुबारकबाद दी और बताया कि इस दिन के साथ मानव जगत की, पशु जगत की, वनस्पति और भौतिक जगत की रक्षा और विकास जुड़ गया। आज धन्य भाग्य महसूस करने और खुशियों से नाचने का दिन है। महा दान पाने और शुभ संकल्प करने, भेंट और त्याग करने का दिन है।

मंत्री जी ने अकबरपुर में पुण्य भूमि को, भगवान के पूर्वजों और माता पिता को स्मरण किया और बार बार नमन किया और मानवता के महासौभाग्य अनुभव करवाए। किन अवस्थाओं में हमें मिथ्या और पाप की दलदल से निकाला गया। किस तरह हमारे परिवारों को शुभ के मार्ग पर डाला गया। उसका भरे दिल से ब्यान किया गया। ऐसे अद्वितीय महान कारज के चौदिग फैलने की शुभकामनाएं की गई और फिर जय ध्वनि के नारे लगाए गए। बैड बाजा जो सूरज की पहली किरण के साथ कुछ देर बजा था वह फिर बजने लगा। सब साथी दो कतारें बनाकर खुशियों से भरे हुए अपने अपने हार हाथों में थामे हुए पंडाल की तरफ अर्चन के लिए बढ़ने लगे। एक माननीय धर्म सम्बंधी बेखुद होकर खुशी से नाचते हुए अर्चन को जा रहे थे। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। हृदय गुरु महाराज के चरणों में झुक रहे थे।

8:30 बजे महासभा का घण्टा बजा।

महासभा

प्रातः 8:30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी का विषय “परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उनका घोर तप और उसके लिए कुर्बानियों की आवश्यकता”

पहले एक महिमा विषयक सुन्दर भजन का गान हुआ। फिर देवस्तोत्र का गान, फिर अर्चन के साथ देवस्तोत्र की व्याख्या की गई। फिर सभापति जी ने सभा

की सफलता के लिए हृदयगत कामना की। फिर जगदीश जी ने “अद्वितीय जीवन व्रत धारी” गीत का गान किया। सभापति जी ने ब्यान किया।

देवात्मा का आविर्भाव महानतम और सर्वश्रेष्ठ घटना है। उन से जुड़ना परम सौभाग्य है। उस से वंचित रहना सब से बड़ा दुर्भाग्य है। मैं उनको और उन के मिशन को घृणा करता था। अब इस महासौभाग्य को ब्यान करने के लिए शब्द प्राप्त नहीं होते। विकास के नियम से हर क्षेत्र में विकास हो रहा है। विकास का नियम अजूबे पैदा करता है। सूर्य का विकास अजूबा है। बेजान से जान, जान से वनस्पति और पशु जगत का आना फिर मनुष्य का उनसे विकास सभी विकास में अजूबे हैं। इन सभी जगतों का विकास हुआ है, हो रहा है, होता रहेगा। मनुष्य का शरीर मुकम्मल हो गया, शरीर की गठन पूरी हो गई। बुद्धि शक्ति आ गई। ज्ञान की बाढ़ आ गई। सवारी के साधन कहां तक विकसित हो गए। इस धरती पर मनुष्य ने बुद्धि द्वारा चारों जगतों का विकास किया है। लेकिन फिर भी इंसान अपने लिए और दूसरों के लिए human bomb बना हुआ है, अपने भावों के विचार से और अपनी घृणाओं के विचार से। अंदर जो नीच भाव है वह हर समय खतरा बने हुए हैं। ऐसा क्यों है? क्योंकि मनुष्य की आत्मिक गठन अधूरी है। कई ऐसे सुन्दर उदाहरणों को पेश करके इस बात को सिद्ध करने की कोशिश की गई।

विकास के क्रम में देवात्मा का आविर्भाव अगला बड़ा अजूबा है। शरीर और बुद्धि के विचार से तो इंसानी सूरत परन्तु नेचर के विकास के क्रम से आत्मा की गठन पूर्णता को प्राप्त हो गई। देवात्मा का देवहृदय तड़प उठता है, जब मनुष्य नीच सुखों के सामानों की तरफ भागा जाता है।

देवात्मा सत्य और शुभ से तिल भर भी इधर उधर नहीं हो सकते। आपके अंदर देवशक्तियों के द्वारा देवज्योति और देवतेज पैदा हो गए। 32 वर्ष की भरी

जवानी में आपने अद्वितीय जीवन व्रत ग्रहण कर लिया।

“सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।”

बताया गया कि इन चारों घटनाओं ने देवात्मा के व्रत धारण में विशेष भूमिका निभाई।

1. मिस मेरी कारपेंटर की जीवन कथा पढ़कर
2. महात्मा बुद्ध की कथा को पढ़कर
3. मेजर टक्कर बूथ के जलसे द्वारा
4. परमात्मा की विशेष कृपा समझकर

ऐसे अद्वितीय जीवन व्रत को रखकर क्या लोगों ने उसको welcome किया? welcome तो बड़ी दूर, चारों तरफ से विरोधता बढ़ने लगी। इस बढ़ती विरोधता की प्रचण्ड लाटों का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया कि किस प्रकार देवात्मा को चारों तरफ से तड़पाया गया। किस तरह धर्म पाल ने, देवरत्न ने देवात्मा को सताने के षड्यन्त्र रचे, उनका भरे दिल से वर्णन किया गया। चंदा सिंह वकील के कारनामे पेश किए गए। किस किस प्रकार विराट सभाएं होती रही हैं देवात्मा को तड़पाने की। इन अद्वितीय दुखों व घोर उत्पीड़नों द्वारा देवात्मा के देव हृदय की अवस्था ब्यान की गई। देवात्मा के अद्वितीय विलाप की वाणियों का पाठ किया गया। क्या सभापति और क्या हाजरी के हृदय भर रहे थे और ऐसी लासानी कुर्बानियों के आगे झुक रहे थे।

धन और जन की अपील : महासभा के बाद श्रीमान जी ने खड़े होकर धन और जन की अपील की। और विकासार्थी सुखदेव सिंह जी को खड़े करके बताया कि यह सौभाग्यवान जन अपनी पढ़ाई और कमाई के आकर्षणीय प्रलोभनों को छोड़कर एक साल से यहां रहकर लाभ उठा रहे हैं। और भी किसी जन ने अपना सच्चा भला करना हो और जीवन सफल करना हो तो आगे बढ़ सकते हैं। इस अपील के response में डा. मंसा सिंह जी और जंगीर सिंह जी ने खड़े होकर बताया कि हम लोग जिस समय जहां भी बुलाएंगे तो वहां पध

रेंगे। लोगों ने अच्छे भावों से भरकर मिशन को दान दिया और इसकी मोटी तफसील फिर दी जाएगी।

दोपहर 2 बजे बच्चों की सभा की और चार बजे पब्लिक लेक्चर की सूचना के साथ जय ध्वनि बुलाकर सभा समाप्त की गई।

बच्चों की सभा : 2 बजे

सभापति मिसिज सुरजीत बराड़

ठीक 2 बजे बच्चों की सभा शुरू हुई जिसमें 12 साल से कम उम्र के बच्चों ने भाग लिया। कई बच्चों ने बहुत सुन्दर भजनों का गान किया। इस प्रकार यह सभा भी अच्छी कामयाब रही।

पब्लिक लैक्चर चार बजे शाम

वक्ता : डॉ. विनोद जी खेड़ा

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

पब्लिक लैक्चर का विषय “धर्म के क्षेत्र में नवीनतम वैज्ञानिक प्रगति, आत्मा की वैज्ञानिक खोज।” वक्ता ने अपने विषय का आरम्भ महात्मा बुद्ध द्वारा अपने अनुयायियों को सुनाई एक कहानी से किया जिसमें उन्होंने अपने अनुयायियों को यह बात समझाने की कोशिश की कि किस प्रकार मिथ्या विश्वास हमें अपने जीवन में आये अवसरों से लाभ उठाने से वंचित कर देते हैं और उसका घाटा हम सारा जीवन उठाते रहते हैं। इसलिए वक्ता ने उपस्थित जनों से अपील की कि वे अपने दिलों और दिमागों को खुला रख कर इस विज्ञान से परिपूर्ण लैक्चर से लाभ उठाएँ।

रेडियो ऐक्टिव आईसोटोप एवं गणित की आधुनिकतम विधियों की सहायता से वैज्ञानिक अब यह प्रमाणित कर चुके हैं कि हमारे शरीर के सभी

Atoms का 98 प्रतिशत एक साल से भी कम समय में बदल जाते हैं और दो साल में पूरे शरीर का हर atom बदल चुका होता है परन्तु शरीर का हर atom बदल जाने के बावजूद भी शरीर की निरन्तरता बनी रहती है। इस प्रकार वक्ता ने बताया कि हर 6 हफ्तों में हमारी

जीभ के स्वाद बताने वाले Taste Buds (स्वाद ग्रन्थियां) बदल जाते हैं। पर वे chocolate का स्वाद नहीं भूलते और स्वाद की पहचान करने की योग्यता की निरन्तरता (Continuity) बनी रहती है। हर 6 हफ्तों में हम अपने Liver (जिगर) का एक बिल्कुल नया Model तैयार कर लेते हैं जिसमें पुराने Liver का कोई Atom और cell नहीं होता। इस प्रकार शरीर व दिमाग के भिन्न भिन्न अंगों के cell और atom के बदल जाने के बावजूद हमारे जीवन में जो निरन्तरता (Continuity) बनी हुई है उसका रहस्य क्या है? कौन सी चीज ऐसी है जो हमें बचपन में सीखी हुई योग्यताओं को 20, 40, 60 साल बाद भी इस्तेमाल करने के योग्य बनाये हुए है। वक्ता ने प्रश्न किया कि वह कौन सी चीज है जिसके शरीर से चले जाने के बाद व्यक्ति को मृत माना जाता है? पर उसके शरीर के भार में मृत्यु हो जाने से कोई अंतर नहीं पड़ता। स्पष्ट है कि वो चीज़ भारहीन है, matter की बनी हुई नहीं है। इस वस्तु को वैज्ञानिक उच्च जागृति (Higher Consciousness) का नाम देते हैं। देव धर्म में इसे आत्मा या जीवनी शक्ति का नाम दिया गया है। आप इसे किसी अन्य नाम से भी पुकार सकते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

आगे चल कर वक्ता ने बताया कि पत्थर के या पौधे के या किसी पशु के सिर के सींग या अन्य किसी अंग के छोटे से छोटे टुकड़े करने पर अंत में कार्बन, नाइट्रोजन, हाईड्रोजन इत्यादि तत्व ही मिलते हैं। वैज्ञानिकों ने मनुष्य के दिमाग का भी चूरा कर के उसे भी इन्हीं तत्वों से बना हुआ पाया है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सारा ब्रह्मांड का base एक ही प्रकार का है।

न्यूटोनियन physics के युग में आज से 200-300 वर्ष पहले यह माना जाता था कि सारा संसार और मनुष्य भौतिक चीज़ों से ही बने हुए हैं। Atoms और उसके अंश Protons, Electrons और Neutrons ही इस विश्व के निर्माणकारी अंग

(Building Blocks) हैं। विश्व में जो कुछ भौतिक नहीं है जैसे मनुष्य का आत्मा, उसे जानने के लिए विश्वास का सहारा लिया जाता था न कि सत्य ज्ञान का, क्योंकि वैज्ञानिक मनुष्य के आत्मा के बारे में ज्ञान पाने में असमर्थ रहा। आधुनिकतम वैज्ञानिक अपनी इस असमर्थता को मजाक रूप में इस प्रकार प्रगट करते हैं कि आत्मा या उच्च चेतना (higher Consciousness) या उच्च जागृति (Higher Awakening) का ज्ञान तो कवि ही अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा दे सकते हैं।

फिर भी वैज्ञानिक इतना अवश्य जान चुके हैं कि हमारा अस्तित्व वास्तव में आत्मा है जो शरीर के साथ रहता है न कि शरीर जो कि आत्मा के साथ। That is we are, "Soul with a body" not "body with a soul".

बीसवीं सदी आयी, विज्ञान के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व प्रगति तब हुई जब Quantum Physics ने जन्म लिया। यद्यपि यह बहुत कठिन विषय है। परन्तु आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसकी सहायता से बहुत महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त किया है। Electron microscopes और दूसरे यंत्रों के द्वारा अध्ययन करने से वैज्ञानिकों को पता लगा कि atom अपने आपमें एक बड़े गुब्बारे की न्यायी है और उसमें बहुत कुछ भरा हुआ है। उन्होंने atom को तोड़ा और तोड़ा और उसमें नये छोटे से छोटे कण देखे जिन्हें बड़े अजीबों गरीब नाम दिये गये जैसे quark, flark, marc इत्यादि।

Atom को तोड़ते तोड़ते वैज्ञानिकों को यह भी पता लगा कि atom का सबसे छोटा भाग एक कण नहीं अपितु केवल energy (शक्ति) है अर्थात् जिस energy (शक्ति) को हम अज्ञानता वश भौतिक शरीर से बाहर की चीज़ मानते व समझते थे वह भौतिक शरीर का ही एक भाग निकल आयी और भौतिक शरीर भी उससे बना हुआ मिला।

1. वैज्ञानिक अनुसंधान करके यह खोज चुके हैं

कि यदि atom (परमाणु) के कुछ इलेक्ट्रॉन एक लाईन में एक विशेष संख्या (critical number) में लगा दिए जाएं तो उस परमाणु के बाकी सभी इलेक्ट्रॉन अपने आप एक लाईन में लग जाते हैं। इस परिवर्तन को Phase Transition कहते हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि शायद यही चीज़ पौधों को पशुओं से और पशुओं को मनुष्यों से अलग कर देती है। इस विषय में अनुसंधान अभी जारी है।

भौतिक जगत, पेड़ पौधों का जगत, पशु पक्षियों का जगत और मनुष्य जगत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जो अंतर है, उसे स्पष्ट करते हुए वक्ता ने बताया कि इन जगत्‌ओं के विकास में जीवनी शक्ति नये से नया रूप धारण करती चली गई है। मनुष्य की जीवनी शक्ति में जो नये गुण आये हैं, उन्होंने मनुष्य को पशुओं से हमेशा के लिए अलग कर दिया है। मनुष्य की उन्नतशील मानसिक शक्ति के करिश्मों से हम सब परिचित हैं। मनुष्य की जीवनी शक्ति या आत्मा का गठन विकास पाने के बावजूद अधूरी है। और इसलिए मनुष्य अपने आत्मा के विषय में अंधकार की हालत में है। बड़े से बड़े वैज्ञानिक भी यह स्वीकार करते हैं कि उन्हें नहीं मालूम कि मनुष्य की जीवनी शक्ति कहां से आती है, कैसी दिखती है, क्या करती है और मनुष्य की मृत्यु के अंतर कहां जाती है? इसके बिल्कुल उल्टे धार्मिक नेताओं और ग्रंथों ने कल्पना का सहारा लेकर इन उपरोक्त विषयों पर अपनी अलग अलग शिक्षा दी है जो परस्पर विरोधी है और इसलिए सब की सब सत्य नहीं हो सकती।

वक्ता ने कहा कि शक्ति को न तो हम तोल सकते हैं, न देख सकते हैं, इसलिए शक्ति का समझना हमारे लिए और भी कठिन हो जाता है। शक्ति अति सूक्ष्म है और इसे केवल इसके प्रभावों द्वारा ही जाना जा सकता है। उदाहरण के तौर पर बिजली की शक्ति की वर्तमानता उसके कार्य द्वारा ही लगायी जा सकती है।

आज हम जिन भगवान देवात्मा का 153वां

वार्षिक जन्म महोत्सव मना रहे हैं, उनकी जीवनी शक्ति में सत्य और शुभ विषयक पूर्णांग अनुराग विकसित हुए जबकि इसके विपरीत मनुष्य की जीवनी शक्ति में केवल सुखों के अनुराग ही विकसित हुए। जिस प्रकार nature के विकास क्रम में पशुओं और मनुष्यों की जीवनी शक्ति में मूलभूत अंतर पैदा हो गया उसी प्रकार मनुष्यों और भगवान देवात्मा की जीवनी शक्ति में nature के विकास क्रम में उपरोक्त मूलभूत अंतर पैदा हो गया।

श्रीमान डा. खेड़ा ने बताया कि हम भौतिक आंखें रख कर भी भौतिक ज्योति के बिना अंधकार में कुछ भी देख नहीं सकते अर्थात् भौतिक ज्योति ही हमें भौतिक जगत के रूप को दिखा सकती है। उसी प्रकार हमारी मानसिक शक्तियां हमें मानसिक ज्ञान प्रदान कर सकती हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। इन मानसिक शक्तियों के बिना मनुष्य जीवन का अधूरा होना अनिवार्य है। इससे आगे चलकर किसी किसी मनुष्य की जीवनी शक्ति या आत्मा में सात्विक शक्तियां भी उत्पन्न हुई हैं। एक व्यक्ति परोपकार एवम हमदर्दी की बहुत कीमती सात्विक शक्तियां रखकर भी अपने अन्य साथी अस्तित्व के लिए हानिकारक प्रमाणित हो सकता है। उन्होंने बताया कि मदर टेरेसा जैसी परोपकार और हमदर्दी की मूर्ति भी मांसाहार करने के कारण पशुओं के प्रति अत्याचार करती रही। इस प्रकार जिन जिन मनुष्यों की जीवनी शक्ति में सात्विक शक्तियां उत्पन्न हुई हैं, वे सात्विक ज्योति को प्राप्त हो कर भी अधूरा रहने के लिए मजबूर हैं और मनुष्य का यह अधूरापन ही उसे अपनी जीवनी शक्ति के विषय में सत्य ज्ञान प्राप्त करने नहीं देता। इसके लिए इन भौतिक शक्तियों, मानसिक शक्तियों तथा सात्विक शक्तियों से भी ऊपर सर्वोच्च प्रकार की शक्तियों की आवश्यकता है जिन्हें हम देव शक्तियां कह सकते हैं। इन देव शक्तियों के बिना कोई मनुष्य अपनी जीवनी शक्ति के विषय में किसी साक्षात् यथेष्ट सत्य ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता। nature

ने अपने ही विकासक्रम में देव शक्तियों को भगवान देवात्मा की जीवनी शक्ति में उत्पन्न व विकसित किया है। विज्ञान के सत्य नियमों पर आधारित आत्मा के विषय में उनकी शिक्षा किसी भी व्यक्ति द्वारा सत्य की कसौटियों पर परखी जा सकती है। और सत्य प्रमाणित होने पर सर्वथा मानने और उससे लाभ उठाने योग्य है।

मनुष्य की जीवनी शक्ति अर्थात् आत्मा के विषय में उनके द्वारा दी गई वैज्ञानिक शिक्षा संक्षिप्त में इस प्रकार से है :-

1. मनुष्य - आत्मा गठन प्राप्त जीवनी शक्ति है और पौधों, पशुओं की गठन प्राप्त जीवनी शक्ति से विकसित हुई है।
2. यह नेचर का अभिन्न अंग है और इसलिए super natural नहीं। नेचर की परिभाषा के अनुसार कुछ भी super natural नहीं हो सकता।
3. नेचर में विकास के क्रम में मनुष्य का शरीर और आत्मा दोनों evolve हुए हैं। हमारा शरीर तथा आत्मा इसी evolution का परिणाम है।
4. मनुष्य आत्मा नेचर के नियमों के अधीन है जैसे विकास, विनाश, परिवर्तन, जन्म और मृत्यु इत्यादि के नियमों के अधीन है।
5. मनुष्य आत्मा की गठन शक्तियों से बनी है और शरीर उसके रहने का घर है।
6. मनुष्य का आत्मा मुख्य है। और उसका शरीर गौण।
7. न केवल मनुष्यों में जीवनी शक्ति है बल्कि पौधों और पशुओं में भी।
8. जैसे निर्जीव शक्ति e.g. electricity अपनी गठन और कार्यों से जानी जाती है। उसी प्रकार मनुष्य आत्मा भी अपनी गठन व कार्यों से जानी जाती है।
9. यह परमात्मा की creation नहीं, बल्कि परमात्मा का विश्वास इसकी अज्ञानता की creation है, Imagination है।

10. माता एवम पिता की जीवनी शक्तियों के मेल से पूर्णतः एक नयी आत्मा का जन्म होता है। जो माता एवम पिता के प्रोटोप्लाज्मा की दो छोटी छोटी बूंदों के टकराव के जरिए अपने नये अस्तित्व में आती है। इस विधि को conception कहते हैं।

भगवान देवात्मा ने मनुष्य आत्मा के कार्यों को चार भागों में विभक्त किया है, वह हैं :-

1. शरीर का निर्माण एवम उसमें वास करना। पौधों और पशुओं की जीवनी शक्तियां भी उनके शरीर का निर्माण करती हैं तथा उनके शरीरों में वास करती हैं। पौधों के बीजों को अथवा अण्डों को उबाल देने से अथवा स्त्री के गर्भ में बच्चे का गर्भपात हो जाने से उनकी जीवनी शक्ति नष्ट हो जाती है और ऐसे बीज व अण्डे व भ्रूण अपने लिए शरीर का निर्माण करने में सक्षम नहीं रहते और अपने शरीर का निर्माण करने की योग्यता को खो देते हैं।
 2. शरीर का पालन करना, उसकी रक्षा करना एवम उस पर शासन करना।
 3. शरीर को जीवित रखना। शारीरिक मृत्यु के अनंतर सूक्ष्म शरीर का निर्माण करके उस सूक्ष्म शरीर के साथ परलोक में निवास करना।
 4. एक से अनेक होने की योग्यता रखना।
- मनुष्य के आत्मा में पहले पहल दुख और सुख बोध उत्पन्न होते हैं। धीरे धीरे यह बोध सुखों के प्रति अनुराग और दुखों के प्रति बैराग बन जाते हैं। इन्हीं नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं ने मनुष्य के जीवन में अंधेरा पैदा कर दिया है। प्राकृतिक आपदाओं को छोड़ कर यही नीच अनुराग मनुष्य के दुखों का कारण बन रहे हैं।

इंग्लैंड की राजकुमारी डायना एवम राजकुमार Charles की कहानी इन नीच सुख अनुरागों और घृणाओं के रूप और उनसे उत्पन्न दुखों को प्रकाशमान करती है। लेडी डायना इंग्लैंड की महारानी की बहू थी।

भावी महाराजा की पत्नी और भविष्य के महाराजा की मां। उनके और उनके पति के जीवन में जो महा दुखदायी घटनाएं पैदा हुईं, उनका मूल कारण उनके भीतर के नीच सुख अनुराग ही थे। जोगी और जू देव भी दो ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें से एक छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री थे तथा दूसरे मुख्यमंत्री बनने ही वाले थे। चाहे वो अपनी हानि के लिए दूसरों को दोषी ठहराते रहें परन्तु वास्तविकता यही है कि उनके पद, धन इत्यादि मूलक नीच सुख अनुराग ही उनके भविष्य को धूमल करने का मुख्य कारण बने। इसी प्रकार घमंड के नीच सुख अनुराग से प्राप्त हानि का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार Switzerland के घड़ी निर्माताओं ने अपने घमंड के कारण विश्व में अपना सर्वोच्च स्थान खो दिया।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपनी देव शक्तियों के संचार से एक एक महा घमंडी व्यक्ति के जीवन में से घमंड का नाश कर उसमें दीनता पैदा करने का लगभग असंभव काम किया है। उनकी देव शक्तियां ही मनुष्य को उसके आत्मा की गठन व स्वरूप दिखा सकती हैं और उसे आत्मिक अंधकार की गर्तों से निकाल कर उसे अपने सार और मुख्य अस्तित्व आत्मा की रक्षा व विकास के मार्ग पर डाल सकती हैं।

सभा के अंत में सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने आगन्तुकों एवम् वक्ता का धन्यवाद किया।

शुभ जन्म दिन के अवसर पर रात्रि में सारी धर्मशाला में रोशनी की गई। और भी कुछ वरिष्ठ लोकल सेवकों ने अपने घर पर रोशनी का आयोजन किया।

10 - 12 - 2003 महोत्सव का आखरी दिन

पहली सभा 8:30 प्रातः सभापति श्रीमान बलबहादुर जी - नए सेवकों का ग्रहण

पहले भजन के गान के बाद अर्चन के साथ देवस्तोत्र का गान किया गया और व्याख्या की गई। चार

नए सौभाग्यवान जनों को गुरु चरणों में दीक्षित करने के लिए आगे बैठाया गया। फिर सभापति जी ने आशीर्वाद प्रार्थना करके नए जनों का परिचय करवाने के लिए कहा।

1. **श्री आसा सिंह जी साहनी :** आप की उम्र 83 साल से उपर है। आप पदमपुर में पिछले 12 - 14 साल से सभाएं सुनते आ रहे हैं। वहां पर डा. मंसा सिंह जी गोवर जो हर रोज दोनों वक्त घंटा घंटा ग्रंथों का पाठ और विचार की सभाएं करवाते हैं, उनसे भी लाभ उठाते रहे हैं। पिछले साल से इन पर संगत से विशेष असर होने लगा। उससे इन्होंने कई हजार के हानि परिशोध किए। रेलवे से ज्यादा मिल जाने वाले (गलती के कारण) रूपए वापिस किए। बचपन में 70 - 75 वर्ष पहले की हुई माता के सम्बंध में घोर अपमान जनक क्रिया के लिए बहुत दुख से कितनी ही दफा सभाओं में खड़े होकर रुदन किया। हजारों रूपया जोर देकर दान दे चुके हैं। सभा करवाने वालों के लिए बड़े होकर भी सम्मान देते हैं। डा. मंसा सिंह जी इनके सेवक बनने से बहुत प्रभावित होकर इनका परिचय दे रहे थे।

2. **श्री गोपाल चंद जी (मंडी गज सिंह पुरा)** आप 22 - 23 साल के नौजवान हैं। आप कई साल से क्या पदमपुर और क्या गज सिंह पुर में सभाएं सुनते आ रहे हैं। एक दो साल से सत्य धर्म बोध उत्सव और महोत्सव पर भी आकर लाभ उठाते रहे हैं। समाज में आने से पहले आप राधा स्वामी मत, ब्रह्मकुमारी मत से जुड़े हुए थे। और मोटे पापों से बचे हुए थे। समाज के सम्पर्क में आकर इनके पिता जी और दादा जी और इन्होंने स्वयं अपनी अपनी दुकानों पर नशे, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, पान मसाला और अण्डे आदि बेचने का काम कोई साल भर या अधिक समय से बिल्कुल बंद कर दिया है। वह भी ग्रंथों का पाठ करने का शौक रखते हैं। डा. साहिब से भी बहुत लाभ उठाते हैं।

3. **बलदेव सिंह (मलेका)** आप 45 - 50 वर्ष के करीब हैं। आप जमींदार क्लास से सम्बंध रखते हैं।

आप अच्छे समझदार व पढ़े हुए हैं। आप कितने वर्षों से सभाओं में आ रहे हैं। कल्याण सत्संग में पहुंचते रहे हैं। कल्याण सत्संग में आपने मांस शराब छोड़ा था। तीन साल बाद फिर खाना पीना शुरू कर दिया। इन्हें फिर दोबारा मल्लेका सत्संग में बुलाया गया और इन्होंने सब कुछ छोड़ने की प्रतिज्ञा की। अब कुछ वर्षों से अपनी प्रतिज्ञाओं पर कायम हैं व खुशी खुशी सेवक बन रहे हैं।

4. श्री ज्ञान सिंह : आप 40 वर्ष के नौजवान हैं। आप वर्षों से सत्संग में आ रहे हैं। कल्याण, केसपुर और चण्डीगढ़ सत्संग में पहुंचते रहे हैं। आप बरसों से शराब, मांस सब नशे आदि त्याग चुके हैं। आप अच्छे सेवक श्री सुखदेव सिंह जी जोसन के नजदीकी रिश्तेदार हैं। उन्होंने इन्हें सत्संग में लाने और सेवक बनाने में बहुत मदद की है। इन सब को विजय पताका के नीचे खड़ा कर बहुत उत्तमता से प्रतिज्ञाएं करवाई गईं। और प्रतिज्ञा के बाद ढेर सारे लोगों ने उन्हें हार पहनाकर सम्मान किया और अपनी खुशियों का प्रकाश किया व दान भी दिया।

सबने नए सेवकों को खुशी मुबारकबाद दी जिसके बाद भाव प्रकाश की सभा की गई। इस सभा के सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे।

भावप्रकाश

श्री बूटा सिंह जी : मैं बहुत रद्दी और घटिया हूं। जो दिन सभाएं मैंने miss की हैं उनका बहुत घाटा महसूस हो रहा है। आगे से ऐसा करने से बचूंगा। सभाओं में आकर उपकारी और याद आए हैं। श्रीमान..... ने मेरी बहुत सहायता की है। मैं इनका अपमान करता रहा हूं। (रो रोकर) मैं उनका धन्यवादी हूं। आगे से उनका कभी अपमान नहीं करूंगा। इससे बचूंगा। मेरा दिल भर भर कर आ रहा है। मैं और भी बहुत अपने हृदय के विचारों को बताना चाहता हूं परन्तु स्टेज पर बोल नहीं पा रहा हूं।

श्रीमान जंगीर सिंह जी : मैं अपने उपकारी श्रीमान

सुखदेव सिंह जी जोसन का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मुझे ऐसे निराले दर से जोड़ा है। मैं श्रीमान (सभापति) जी से खार खाता था। उनको बहुत बुरा समझता था। जितना श्रीमान जी ने संग्राम किया है, ब्यान नहीं हो सकता। वीराने में जा जाकर पौधों को पानी डालकर जिंदा रखते हैं। मैं अपराधी हृदय रखता था। महाराज की फोटो को बुरा भला बोलता था। मैं आखरी सांस तक जुड़ा रहूंगा। मैं सिख धर्म में गाढ़ विश्वासी बनकर कट्टर बना हुआ था। पाठ पूजा भी बहुत करता था। सेवा भी करता था। मगर घमण्ड नीच घृणा से भरा रहता था। और लड़ाका था। मेरा घर उजड़ा बसाया है। अपनी छोटी से बच्ची को बहुत पीटता था। मेरी दो लड़कियां हैं वह मुझे लड़कों से ज्यादा प्यारी हैं। गुरु महाराज की कृपा से कभी यह सोच ही पैदा नहीं हुई कि लड़की क्या लड़का क्या। कभी लड़के की तकलीफ ही महसूस नहीं हुई। उनकी पालना में मैंने कभी कमी नहीं की कि वह लड़कियां हैं। मैं जब यहां आता हूं तो डा. सेवक प्रसाद जी और उनके परिवार को सिर झुका झुका कर धन्यवाद देता हूं कि जो हमें महोत्सव के लिए इतनी बड़ी सहायता करते हैं। प्रवेश सभा ने मेरे कपाट खोल दिए। बहुत प्रभाव मिले। मैं पिंगला था मुझे बचाया गया है। डा. खेड़ा साहिब जी ने lecture में कमाल से एक एक चीज समझाई। श्रीमती बराड़ जी के lecture ने मेरे घर को संवारा है। मेरी पत्नी को अपना आप नजर आया है और वह झट सेविका बनने के लिए तैयार हो गई।

श्री सुखदेव सिंह जी (विकासार्थी): मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं कि मैं ऐसे अद्वितीय आविर्भाव परमपूजनीय सतगुरु के शुभ जन्म महोत्सव में शामिल हूं। अगर मुझ से कोई पूछे कि मेरा सबसे खुशी का दिन कौन सा है तो मुझे अपना सबसे खुशी का दिन यही महसूस होता है कि जिस दिन पूर्णतः हित अनुरागी व सत्य अनुरागी देवात्मा प्रकट हुए थे। उनका जन्म महोत्सव ही मेरे लिए सबसे खुशी का दिन है। मेरे दाता ने मुझे क्या क्या दिया। इसको बताने के लिए मेरे पास वैसा न तो विशेष

दिल है और न ही अच्छा दिमाग। अगर मैं यह कहूँ कि मेरे सतगुरु ने मुझे मिथ्या से बचाया है तो यह भी मैं अधूरा उत्तर मानता हूँ। अगर यह कहूँ कि मेरे दाता ने मुझे मोटे मोटे पापों से बचाया है और कई सूक्ष्म पापों से भी बचा रहे हैं तो यह भी अधूरा उत्तर मानता है। अगर यह कहूँ कि मेरे सम्बंधों में मेरा बहुत हित हुआ है तो यह भी अधूरा उत्तर ही होगा। अधूरा तब तक रहेगा जब तक मुझे यह गहराई का पता नहीं चलता कि मेरे दाता ने किन हालातों में से गुजरकर, कैसे कैसे अद्वितीय त्यागों व अद्वितीय दुखों को अपने ऊपर लेकर हम दुर्बल मनुष्यात्माओं को बचाया है। जब तक इस आधार की गहराई नजर नहीं आती तब तक मेरे दाता के उपकारों को समझना मैं अधूरा ही समझता हूँ। मैं दुर्बल जीव ऐसे गुरु के अद्वितीय त्यागों व अद्वितीय दुखों को तो क्या महसूस कर सकता हूँ। एक एक उच्च कर्मचारी के अनोखे त्यागों को सामने लाने के योग्य नहीं हूँ कि जिन्होंने देवराज फैलाने के लिए अपने आप को कुर्बान कर दिया। जो मुझे ऐसे अद्वितीय ग्रंथ पढ़ने को मिले हैं और ऐसा विशेष वातावरण मिला है, व मिल रहा है उससे मुझे यह विश्वास हो गया है कि अगर मेरा नीच जीवन कट सकता है और योग्यता होने पर कुछ उच्च भाव पैदा हो सकते हैं तो वह सिर्फ व सिर्फ देवात्मा के देवप्रभावों से। ऐसा अधिकार मुझे मिल रहा है जो एक बड़े बड़े साईंसदान को नहीं मिला। मेरे सम्बंधों में हितकर मेल आया है। मेरी बहिन जी जो मेरी बहुत ही उपकारी हैं, उनको इस महोत्सव में बैठा देखकर धन्य धन्य महसूस कर रहा हूँ। आप मुझे बहुत प्यार करती हैं। आप अपने बच्चों की पढ़ाई की भी परवाह न करते हुए यहां पहुंची हैं। मेरी इच्छा का ख्याल करके बड़ी मुश्किल से यहां पहुंची हैं। आप भगवान देवात्मा को नहीं जानती परन्तु मेरे साथ गाढ़ सम्बंध महसूस करके मुश्किल हालातों में से गुजरकर यहां पहुंची हैं। उनको जितना धन्यवाद दे सकूँ, कम है। मैं अपने सौभाग्य कि कोई सीमा नहीं समझता कि जिस का

मैं कभी अधिकारी नहीं हो सकता था, नेचर ने मुझे वह भी सब कुछ दिया। हृदय में कई बार ख्याल उठता है कि नेचर! तुमने मुझे वह सब कुछ दिया जो मैं कभी कल्पना में भी नहीं सोच सकता था। मुझे ऐसे श्रद्धेय माता पिता दिए हैं, ऐसे भाई बहन दिए हैं, ऐसे मित्र दिए हैं, ऐसे साथी सेवक व ऐसे कर्मचारियों की संगत में रहने का महासौभाग्य दिया है। जिसको पाकर मैं धन्य धन्य हूँ। मेरे अंदर शुक्रगुजारी न होने के कारण वैसे तो जीवन के लिहाज से कई पक्षों में बहुत बड़ा घाटा रह जाएगा। परन्तु मुझे सबसे बड़ा घाटा इस बात का लग रहा है कि ऐसे विशेष माता पिता व भाई बहन के लिए शुक्रगुजारी से भरकर सेवाकारी न हो सकूँगा। माता पिता का रूप फरिश्ता नजर आने लगा है। मेरी बहिन जी एक देवी हैं। हो सकता है कि हमारे दूसरे परिवार वालों के लिए आप एक मामूली सी कन्या समझी जाएं, परन्तु मेरे लिए आप देवी हैं।

ऐस गुरु को पाकर यह महसूस हुआ है कि नेचर के पास सबसे बढ़कर कीमती कोई खजाना है तो वह है देवात्मा सतगुरु के देवप्रभाव। नेचर ने मुझे उस खजाने की चाबी दे दी है कि मुझमें जितनी योग्यता है वह खजाना ले जाओ। इस दर को पाकर कितना धन्य धन्य हूँ मगर महासौभाग्य से भी उपर कोई शब्द है तो वह मैं महसूस कर रहा हूँ। परन्तु अफसोस व महा अफसोस। मेरे पास वह हृदय व वह दिमाग नहीं कि इस खजाने की असल कदर जान सकूँ। जब अपना नीच रूप नजर आता है तो भगवान को धन्य धन्य कह उठता हूँ। ऐसे विशेष महोत्सव पर शामिल होने के लिए मेरे लिए बड़ी से बड़ी नजदीकी शादी भी विधन नहीं बन सकती।

जो कुछ भगवान ने दिया है उसका बदला कभी दिया ही नहीं जा सकता। हर पक्ष में हित हो रहा है। मेरे दाता सर्वहित सम्पादक हैं। उनके उपकारों में से सिर्फ एक पक्ष का भी बदला नहीं चुकाया जा सकता चाहे मैं भगवान के मिशन में सारी जिन्दगी भर के लिए सेवाकारी हो सकूँ। दिल में ख्याल उठता है कि अगर मेरे

भगवान की शिक्षा, उनके देवप्रभाव इस कदर मेरे लिए उपकारी न भी होते तो भी उनका अपने आप में जो सुन्दर रूप है, उनके अद्वितीय ग्रंथों को पढ़कर उनका सुन्दर रूप चमकता है, उसका भी बदला नहीं दे सकते। उनके अद्वितीय ग्रंथों को पढ़कर उनका सुन्दर रूप चमकता है। उसका भी बदला नहीं दे सकते। उनके अद्वितीय ग्रंथों को कई बार चार पांच घंटे लगातार पढ़ते रहने से भी छोड़ने का दिल नहीं करता। हृदय भर आता है। अद्वितीय त्यागों को पढ़कर। कैसा देव हृदय! कि मनुष्य आत्माओं को बचाने के लिए सब आवश्यक अद्वितीय त्यागों व अद्वितीय दुःखों को अपने ऊपर लिया है। ऐसे literature को पढ़ा नहीं जाता। आंखों में आंसू आ जाते हैं। हृदय बिलबिला उठता है। अपने साथियों से अपील करता हूँ कि जिनको जिन्दगी meaningless नजर आ रही हो, जिन्दगी से ऊब गए हो, जिन्दगी से निराश हो चुके हो, मेरे सतगुरु के अद्वितीय त्यागों को पढ़ लो। जिन्दगी का मतलब समझ आ जाएगा। जिन्दगी में नई बहार आ जाएगी। ऐसी philosophy को पढ़कर मैं धन्य।

श्रीमान गुरुदेव राज जी : 9 साल से सेवक बना हुआ हूँ। कभी महोत्सव की कोई सभा नहीं छोड़ी। मगर इस दफा महोत्सव की तीन सभाओं से वंचित रहा हूँ। मेरा दिल तो इधर ही था। बहुत बड़ा घाटा व दुःख महसूस होता रहा है। आगे से इस तरह नहीं करूँगा। यह जो वजूद खड़ा है माता पिता को दुखी करने वाला, बुरा स्लूक देने वाला, उन्हें सताने और तड़पाने वाला था, अब उनके चरणों में सिर रख कर प्रणाम करता हूँ। प्रणाम करने से जो आशीर्वाद मिलती है उसका ब्यान नहीं हो सकता। गुरु की अपार कृपा महसूस करता हूँ। मेरा बच्चा मेरे चरणों में सिर रख कर प्रणाम करता है, क्या यह क्रिश्मा नहीं है? इस प्रबंध और सेवाकारी जनों का बहुत बहुत धन्यवादी हूँ।

श्रीमान सुन्दर लाल जी : बहुत सम्मान के योग्य धर्म सम्बन्धियों जो गुरुदेव राज जी ने कहा है मैं अपने

माता पिता का अपमान करता रहा हूँ। इन्होंने तो सिर्फ अपमान ही किया है मगर मैं तो माँ का कातिल हूँ। (जोर जोर से रोने के लिए मजबूर हो गए) मैं अपनी माता को मारने वाला हूँ। मिथ्या का सहारा ले लेकर इस तरह का दुष्ट मैं बन गया और घर में नरक पैदा किया। माँ ने हाथ जोड़े कि बेटा क्या करते हो। मैंने एक न सुनी। उनको जोर का सदमा लगा और बीमार हो गई और माता चली गई। हमेशा के लिए उसका साया चला गया। अगर गुरु महाराज का दरबार न मिलता तो यहां मेरे बड़े भाई साहिब बैठे हैं, मैं इनको भी मार देता। मैंने उनकी भी नहीं सुनी थी और उनको सदमा लगाकर इनको भी मार देता। माँ के मरने के बाद इसी भाई ने रोका और मैंने एक नहीं सुनी। धन के बंधन से जकड़ा रहा।

मेरे भान्जे बिगड़ गए। माता पिता को सताने लगे। मैंने समझाया। मगर वह न समझे। मगर वह एक सभा में उठकर मेरे पांव में गिर गए। वह बदल गए और मैं हिल गया। इस दर पर आकर दिल में आया है कि भाई और भावज के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करूँगा। इसके बाद एक स्वर्गीय दृश्य पैदा हुआ। इन्होंने एक सुन्दर हार लेकर अपने बड़े भाई साहिब के पास जाकर उन्हें पहनाया और उनके चरणों में प्रणाम करने के लिए ढेर हो गए फिर उनके छोटे भाई ने उठकर पहले बड़े भाई साहिब के पास जाकर उन्हें पहनाया और उनके चरणों में प्रणाम करने के लिए ढेर हो गए फिर उनके छोटे भाई ने उठकर पहले बड़े भाई को चरणों में गिर कर प्रणाम किया और फिर मंजले भाई को उसी तरह चरणों में गिर कर प्रणाम किया। अजब स्वर्गीय दृश्य पैदा हुआ। बहुत से हाजरीन आंसू बहाने लगे। जब से गुरु दरबार में आए हैं। हम भाई और भावजा को प्रणाम करते हैं। 45-50 वर्ष के, परिवार रखने वाले भाईयों का इस तरह प्रणाम करना गुरु महाराज के देवप्रभावों की उज्ज्वल करामात दिखा रहा था। हम एक शादी में गए वहां घर में अनबन थी। सब रिश्तेदार अपने आप को और अपने लड़कों को ठीक समझते थे। जब मेरे भाई साहिब ने

उन्हें बताया कि मेरे भाई मुझे रोज उठकर सुबह चरणों में प्रणाम करते हैं। इस बात से उबला हुआ माहौल शांत हो गया और सैकड़ों जनों के दिल पर अजब असर हुआ। यह सब गुरु महाराज के प्रभावों की लीला है।

प्रेम चंद जी वाणी : जब मैं पैदा हुआ बेहद बहुत खुशी मनाई गई। बड़ा होकर मां बाप से बुरी तरह लड़कर सारा सामान उठा कर घर से पत्नी समेत निकल गया। जब मुझे कोई सुधरने की बात कहता तो मैं गोली मारने को कहता। मगर मां बाप का सम्मान करना बेहद मुश्किल काम नजर आता था। अगले साल अपनी धर्म पत्नी को सेवक बनाऊंगा। मैं मुर्दा सेवक नहीं रहना चाहता। मैं जिन्दा सेवक रहूंगा।

श्रीमोहन जी : भगवान ने ऐसी रोशनी दी है जो कहीं नहीं मिलती। भगवान ने नीच अनुरागों को दिखाया। शराब, मांस, सिगरेट, बीड़ी से बचाया है। भगवान की रोशनी तीर की तरह लगी। अधिकारी आत्मा उसी वक्त घायल हो जाता है। और तबदील हो जाता है। भगवान की ज्योति में महसूस हुआ है कि आगे से कोई सभा Miss नहीं करूंगा। अपना जीवन बनाना चाहता हूँ। आत्मा का भला करना चाहता हूँ। दूसरों की सेवा करना चाहता हूँ। मैंने बहुत से लोगों को नशे लगाए थे अब उनपर अपना स्वर्च करके छुड़वाऊंगा। यह परिशोध करूंगा यह प्रतिज्ञा करता हूँ।

गोपाल कृष्ण जी : हम नीच और अदना आत्मा हैं। मैं पिछड़े वर्ग में रहकर भी नशों से बचा हुआ हूँ। मेरे अंदर बहुत नीच घृणा और नीच अनुराग और अहंकार भरे हुए हैं। उच्च जीवन का नाम ही धर्म है। यही हमारा परम लक्ष्य है। हम डाक्टर साहिब को बुरा देखते थे कि इन्होंने बारह धर्म बदले और अब ओह्म शान्तियों में क्यों नहीं आते। अब और ही धर्मों में पड़ गए। इन्होंने ही हमारा सब भला किया है।

श्रीमान अजीत सिंह जी : श्रीमान जी ने जितना संग्राम किया उसकी तस्वीर नहीं नजर आती थी। बरसात

के दिनों हमारे गांवों में एक ट्रैक्टर दलदल में खूब गया। छः और ट्रैक्टर उसको निकालने के लिए लाए गए। वह तब निकले जब जमीन सूख गई। इसी तरह हम सब मिथ्या और पाप में फसे हुए हैं। ऐसा दिल में आता है कि जितनी देर हम जिंदा रहें, हम इस तरह सब साथी सेवक मिलकर इकट्ठे रहें, पचासों साल महोत्सव पर इकट्ठे रह सकें। काश! यह कामना पूरी होती रहे। गुरु महाराज के दर के साथ सदा सदा के लिए जुड़े रह सकें। कल खेड़ा साहिब जी ने हमारा पूरा ख्याल रख रखकर हमें समझाते रहे। उनकी बहुत कृपा महसूस हो रही थी। इन्होंने कहा कि मेरे दिल में एक बहुत तकलीफ है कि मेरे भाई के घर में दूध की कमी है। सिर्फ 6 से 7 किलो दूध होगा। मैंने अपने घर से एक और गाय भाई के पास भेज दी मगर उन्होंने चंद दिन में फिर वापिस कर दी।

एक और स्वर्गीय दृश्य : बड़े भाई व्याकुल होकर छोटे भाई के घर गाय भेजते हैं। दूसरे भाई गाए न लेने के लिए मिन्नतें करते हैं। बड़े भाई ने अपनी गाय न लेने की तकलीफ का सभा में खड़े होकर जिकर कर दिया और सभापति से भी अपनी आरजू पूरी करवाने के लिए सिफारिश करने को कहा। छोटा भाई भी खड़ा हो गया। बड़ा भाई गाय देने के लिए बार बार दलीलें देने लगा। छोटा भाई न लेने के लिए मिन्नतें करने लगे। आखिर सभापति जी ने दोनों को प्रणाम किया और कहा कि हम लोगों ने मिलकर आपको महोत्सव की सभाएं सुनाई। आप दोनों भाईयों ने अपने परस्पर के भावों का परिचय देकर हमारी सभा करवा दी। हम आपके धन्यवादी हैं। इस घटना से लोगों के हृदय आपके सामने झुक रहे थे व धन्य धन्य महसूस करते हुए गुरु महाराज को धन्यवाद दे रहे थे।

डा. मनसा सिंह जी गरोवर : उपरोक्त भाईयों को इस तरह तड़पते देखकर मेरे अंदर आग सी लग गई कि किसी ने सच्चे भाई देखने है तो आप इधर आकर देखें। कमाल हो गई! राम चन्द्र और भरत जैसे भाई देखने को मिलते हैं। इधर आकर नई होश आई है। नीच

अनुराग नजर आते हैं। मेरा अहं अनुराग, धन का अनुराग नजर आए हैं। बहुत कोढ़ी और रद्दी वजूद हूँ। इससे निकलने के भाव पैदा होते हैं। मेरे नीच अनुराग घट सकें व स्वत्तम हो सकें, इसके लिए मेरे अंदर तड़प है।

श्री अनिल कुमार जी : हमें बहुत लाभ हुआ है। मैं चाहता हूँ कि हम सब सभा करवाने वालों की सेहत के लिए शुभकामनाएं किया करें। उनकी बहुत जरूरत है।

श्रीमान नरेन्द्र दत्त धीमान जी : मैं जब साधन करता हूँ तो इन धर्म सम्बन्धियों को याद करता हूँ और उनकी सेहत के लिए कामना करता हूँ।

श्रीमान हरदेव सिंह जी : भाव प्रकाश की सभा में नजर आता है कि धर्म सम्बन्धियों के मुझ तुच्छ पर बहुत उपकार हैं। वह बार बार मुझे माता पिता का रूप दिखाते हैं। मेरे में धन अनुराग ज्यादा है। मेरे परिवार के कलह कलेश से धर्म सम्बन्धी बचाते हैं और नरक दूर करते हैं। वह मेरी इसी तरह मदद करते रहें। मैं धर्म सम्बन्धियों के उपकार देखा करूंगा।

श्रीमान बलदेव सिंह जी मलेका (नए सेवक): मैं बड़ा शैतान रूप रखता था। खूब चालाकी से शैतानी करता और पता न लगने देता। मजदूरों से काम ज्यादा लेता, रुपये कम देता था। मजदूरों को अपने दोस्त बनाकर शराब पिलाकर बेहोश कर देता। इस तरह एक जन के पांच सौ रुपये मार लिए। इस तरह शैतानी करता रहा। अब मैं कई सालों से सभाएं सुनता हूँ। अब किसी

का एक पैसा तक मार खाने की कोशिश नहीं करता। अभी मजदूर लगे थे, उनकी मजदूरी 775 रुपये बनती थी। वह उन्होंने आपस में बांटने थे। वह 770 रुपये मांगने लगे ताकि बांटने में आसानी रहे। मैंने उन्हें 800 रुपये देकर बहुत खुशी महसूस की।

श्रीमान ज्ञान सिंह जी : जब मैं इधर आया तो इससे पहले भाई की सेहत ठीक नहीं रहती थी। मैंने भाई की डाक्टरी मदद करवाई। भाई को मिथ्या साधन करने नहीं दिया। इस जगह आकर ऐसा महसूस होता है कि मैं मरनी मर जाएंगा अब किसी मिथ्या की तरफ साधू, फकीरों की तरफ नहीं जाऊंगा। चाहे मेरी गर्दन उतर जावे।

समय बहुत हो गया था। एक से ऊपर बज गये थे तो सभापति ने इस सभा को खत्म करने की कोशिश की। गुरु महाराज अन्य सहायकारी शक्तियों, धर्मशाला के प्रबंध, सेवाकारी साथियों, सभा करवाने वालों और आने वाले सब यात्रियों का, इस महोत्सव की अपनी योग्यताओं से बढ़कर सफलता के लिए गहरे दिली भावों से धन्यवाद अदा किया। कल्याणसभा का पता दिया कि वह 13,14,15 फरवरी को रखा जाएगा। इसके साथ सब ने खड़े होकर देव आरती का गान किया और भगवान की जय ध्वनि के नारे बुलंद किए। इसके साथ ही यह चार दिन का पर्व सम्पन्न हो गया और धर्मसम्बन्धी पंडाल के सामान को समेटने संभालने में जुट गए।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक “धर्म जीवन” चण्डीगढ़ ने Surya Laser Den, 3463/37-D Chandigarh से प्रकाशित किया।

सम्पादक डा० विनोद खेड़ा

Book Posts

